



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

Sanjay Sharma

15/09/1994

12:30 PM

द्वारा निर्मित



DIVINE MESSENGER
THE SOURCE OF LIFE

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

| | |
|-------------|---------------|
| नाम | Sanjay Sharma |
| लिंग | पुरुष |
| जन्म दिनांक | 15/09/1994 |
| जन्म समय | 12:30 PM |
| जन्म स्थान | |
| अक्षांश | 28 N 36 |
| देशांतर | 77 E 06 |
| समय क्षेत्र | +05:30 |
| अयनांश | 23:46:59 |

ज्योतिषीय विवरण

| | |
|-------------------|----------------|
| लग्न | वृश्चिक |
| लग्न स्वामी | मंगल |
| चंद्र राशि | मकर |
| चंद्र राशि स्वामी | शनि |
| नक्षत्र | उत्तर आषाढ़ |
| नक्षत्र स्वामी | सूर्य |
| चरण | 3 |
| तिथि | शुक्ल एकादशी |
| पाया | चांदी |
| योग | शोभन |
| करण | वणिज |
| वर्ण | वैश्य |
| तत्त्व | पृथ्वी |
| वश्य | जलचर |
| योनी | नकुल |
| गण | मनुष्य |
| नाडी | अन्त्य |
| नामाक्षर | भे, भो, जा, जी |
| सूर्य राशी | सिंह |
| सूर्य राशी स्वामी | सूर्य |
| डेकानेट | 3 |
| डेकानेट स्वामी | मंगल |

सामान्य कुंडली विवरण

अशुभ अंक

| | |
|---------|----------|
| राशी | वृश्चिक |
| महीना | वैशाख |
| तिथि | 4, 9, 14 |
| दिन | मंगलवार |
| नक्षत्र | रोहिणी |
| प्रहर | 4 |
| लग्न | कुंभ |
| योग | वैधृ |
| करण | शकुनि |

शुभाशुभ अंक

| | |
|---------------|-------------------------|
| सौभाग्य अंक | 6 |
| शुभांक | 4, 5, 6 |
| अशुभ अंक | 3, 9 |
| शुभ वर्ष | 15, 24, 33, 42, 51 |
| भाग्यशाली दिन | रविवार, सोमवार, मंगलवार |
| शुभ ग्रह | सूर्य, चंद्र, मंगल |
| अशुभ ग्रह | बुध, शुक्र |
| अनुकूल राशी | कर्क, सिंह, मीन |
| शुभ लग्न | वृषभ, कर्क, कन्या, कुंभ |
| शुभ रत्न | तांबा |
| शुभ समय | सूर्योदय के बाद |
| शुभ दिशा | दक्षिण |

ग्रहों की स्थिति

| ग्रह | वक्री | राशी | अंश | राशि स्वामी | नक्षत्र | नक्षत्र स्वामी | भाव |
|----------|-------|---------|----------|-------------|---------------|----------------|-----------|
| सूर्य | -- | सिंह | 28:25:51 | सूर्य | उत्तर फल्गुनी | सूर्य | दशवें |
| चंद्र | -- | मकर | 04:08:48 | शनि | उत्तर आषाढ़ | सूर्य | तीसरे |
| मंगल | -- | मिथुन | 24:50:49 | बुध | पुनर्वसु | बृहस्पति | आठवें |
| बुध | -- | कन्या | 22:15:41 | बुध | हस्त | चंद्र | ग्यारहवें |
| बृहस्पति | -- | तुला | 18:21:57 | शुक्र | स्वाति | राहु | बारहवें |
| शुक्र | -- | तुला | 12:13:11 | शुक्र | स्वाति | राहु | बारहवें |
| शनि | हाँ | कुंभ | 14:12:12 | शनि | शतभिषा | राहु | चौथे |
| राहु | हाँ | तुला | 23:41:06 | शुक्र | विशाखा | बृहस्पति | बारहवें |
| केतु | हाँ | मेष | 23:41:06 | मंगल | भरणी | शुक्र | छटे |
| लग्न | -- | वृश्चिक | 20:35:07 | मंगल | ज्येष्ठा | बुध | पहले |



सूर्य

सिंह
उत्तर फल्गुनी
शुभ



चंद्र

मकर
उत्तर आषाढ़
--



मंगल

मिथुन
पुनर्वसु
--



बुध

कन्या
हस्त
अशुभ



बृहस्पति

तुला
स्वाति
--



शुक्र

तुला
स्वाति
बधक



शनि

कुंभ
शतभिषा
सम



राहु

तुला
विशाखा
--

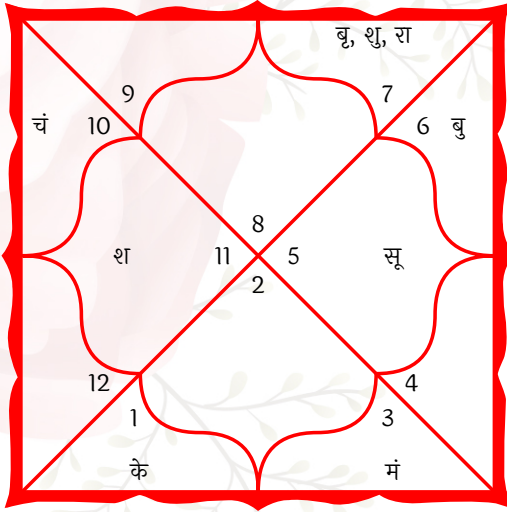


केतु

मेष
भरणी
--

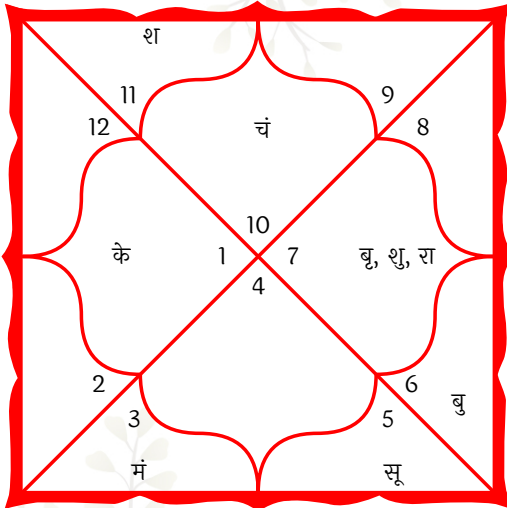
जन्म कुंडली

लग्न कुंडली



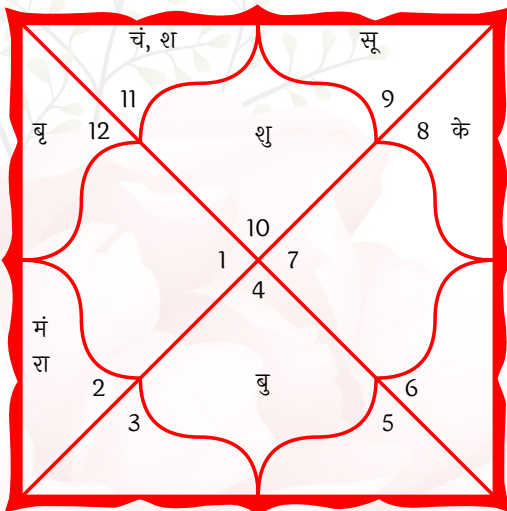
लग्न, जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर उगने वाली राशि की डिग्री है। लग्न जन्म या लग्न चार्ट के भीतर सबसे प्रभावशाली और महत्वपूर्ण संकेत है। इस राशि को कुंडली का पहला भाव माना जाएगा और अन्य भावों की गणना राशि चक्र के बाकी राशियों के क्रम में होती है। इस प्रकार, लग्न न केवल आरोही चिन्ह, बल्कि चार्ट के अन्य सभी भावों को भी चित्रित करता है।

चंद्र कुंडली



लग्न कुंडली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निर्माण होता है जो चंद्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

नवमांश कुंडली(D9)

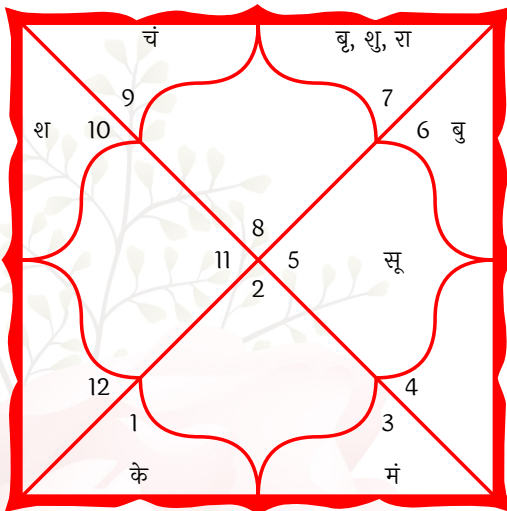


नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि गर्ह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वगोर्तम की स्थिति उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रूप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

भाव संधि

| भाव | राशी | भाव मध्य | राशी | भाव संधि |
|-----|---------|----------|---------|----------|
| 1 | वृश्चिक | 20:35:07 | धनु | 07:29:07 |
| 2 | धनु | 24:23:06 | मकर | 11:17:06 |
| 3 | मकर | 28:11:05 | कुंभ | 15:05:05 |
| 4 | मीन | 01:59:05 | मीन | 15:05:05 |
| 5 | मीन | 28:11:05 | मेष | 11:17:06 |
| 6 | मेष | 24:23:06 | वृषभ | 07:29:07 |
| 7 | वृषभ | 20:35:07 | मिथुन | 07:29:07 |
| 8 | मिथुन | 24:23:06 | कर्क | 11:17:06 |
| 9 | कर्क | 28:11:05 | सिंह | 15:05:05 |
| 10 | कन्या | 01:59:05 | कन्या | 15:05:05 |
| 11 | कन्या | 28:11:05 | तुला | 11:17:06 |
| 12 | तुला | 24:23:06 | वृश्चिक | 07:29:07 |

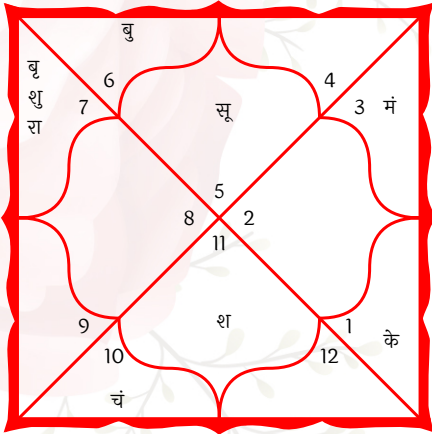
चलित कुंडली



लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है की लग्न कुंडली यह दशार्ती है की जन्म के समय क्या लग्न है और सभी गर्ह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है की जन्म के समय किस भाव में कौन सी राशि का पर्भाव है और किस भाव पर कौन सा गर्ह पर्भाव डाल रहा है।

वर्ग कुंडली - I

सूर्य कुंडली



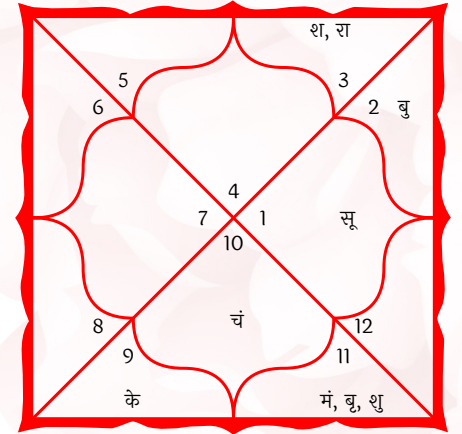
शरीर, स्वास

होरा कुंडली (D2)



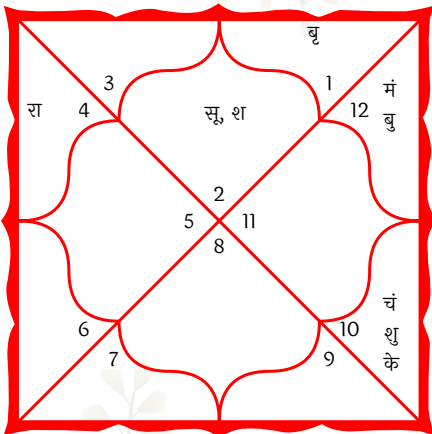
वित्त, धन -सम्पदा, समृद्धि

द्रेष्काण कुंडली (D3)



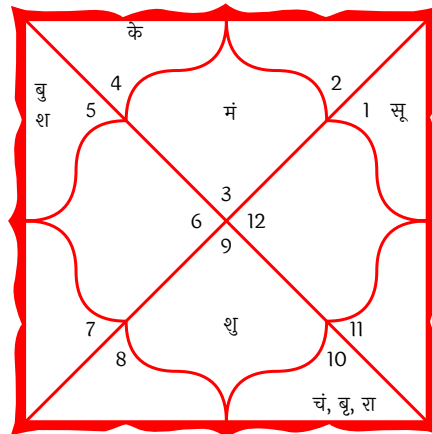
भाई, बहन

चतुर्थांश कुंडली (D4)



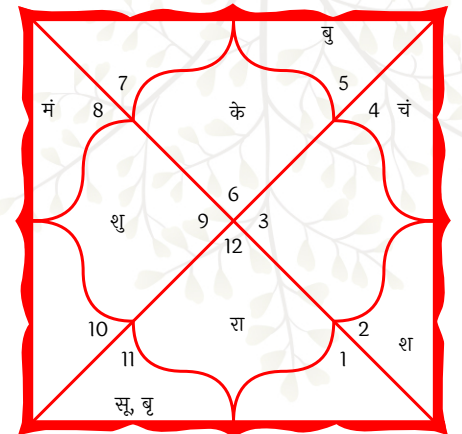
भाग्य

पंचमांश कुंडली (D5)



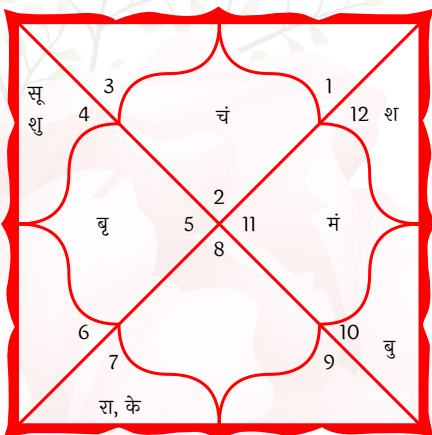
आध्यात्मिकता

सप्तमांश कुंडली (D7)



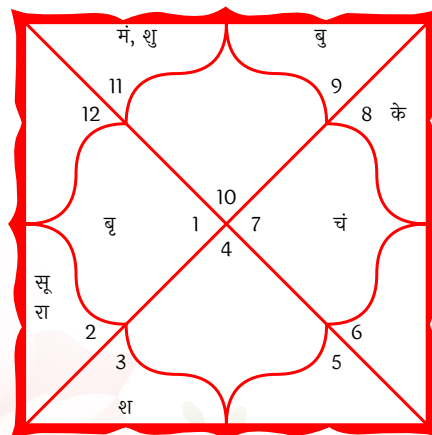
सन्तान

अष्टमांश कुंडली (D8)



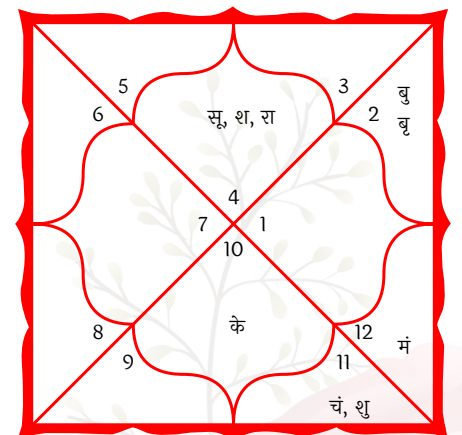
आयु

दशमांश कुंडली (D10)



व्यवसाय, जीवनयापन

द्वादशांश कुंडली (D12)



माता-पिता, पैतृक सुख

विम्शोत्तरी दशा - I

सूर्य

03-05-1991 18:18

03-05-1997 18:18

चंद्र

03-05-1997 18:18

03-05-2007 18:18

मंगल

03-05-2007 18:18

03-05-2014 18:18

सूर्य 21-08-1991 18:17

चंद्र 03-03-1998 18:18

मंगल 30-09-2007 18:18

चंद्र 21-02-1992 18:17

मंगल 03-10-1998 18:18

राहू 18-10-2008 18:18

मंगल 27-06-1992 18:16

राहू 03-04-2000 18:18

बृहस्पति 24-09-2009 18:17

राहू 21-05-1993 18:16

बृहस्पति 02-08-2001 18:17

शनि 02-11-2010 18:17

बृहस्पति 11-03-1994 18:16

शनि 04-03-2003 18:16

बुध 29-10-2011 18:17

शनि 23-02-1995 18:15

बुध 04-08-2004 18:16

केतु 27-03-2012 18:17

बुध 29-12-1995 18:14

केतु 04-03-2005 18:16

शुक्र 27-05-2013 18:17

केतु 05-05-1996 18:13

शुक्र 04-11-2006 18:16

सूर्य 03-10-2013 18:16

शुक्र 03-05-1997 18:18

सूर्य 03-05-2007 18:18

चंद्र 03-05-2014 18:18

राहू

03-05-2014 18:18

03-05-2032 18:18

बृहस्पति

03-05-2032 18:18

03-05-2048 18:18

शनि

03-05-2048 18:18

03-05-2067 18:18

राहू 15-01-2017 18:18

बृहस्पति 21-06-2034 18:17

शनि 06-05-2051 18:17

बृहस्पति 08-06-2019 18:17

शनि 02-01-2037 18:16

बुध 15-01-2054 18:17

शनि 14-04-2022 18:17

बुध 08-04-2039 18:15

केतु 24-02-2055 18:17

बुध 01-11-2024 18:16

केतु 14-03-2040 18:14

शुक्र 23-04-2058 18:16

केतु 19-11-2025 18:16

शुक्र 13-11-2042 18:13

सूर्य 04-04-2059 18:15

शुक्र 19-11-2028 18:16

सूर्य 31-08-2043 18:13

चंद्र 03-11-2060 18:14

सूर्य 13-10-2029 18:16

चंद्र 31-12-2044 18:12

मंगल 12-12-2061 18:14

चंद्र 13-04-2031 18:16

मंगल 07-12-2045 18:11

राहू 18-10-2064 18:14

मंगल 03-05-2032 18:18

राहू 03-05-2048 18:18

बृहस्पति 03-05-2067 18:18

विम्शोत्तरी दशा - ॥

बुध

03-05-2067 18:18

03-05-2084 18:18

केतु

03-05-2084 18:18

03-05-2091 18:18

शुक्र

03-05-2091 18:18

03-05-2111 18:18

बुध 30-09-2069 18:17

केतु 26-09-2070 18:17

शुक्र 26-07-2073 18:17

सूर्य 01-06-2074 18:16

चंद्र 01-11-2075 18:16

मंगल 28-10-2076 18:16

राहू 16-05-2079 18:15

बृहस्पति 22-08-2081 18:14

शनि 03-05-2084 18:18

केतु 30-09-2084 18:18

शुक्र 30-11-2085 18:18

सूर्य 05-04-2086 18:17

चंद्र 05-11-2086 18:17

मंगल 01-04-2087 18:17

राहू 19-04-2088 18:17

बृहस्पति 25-03-2089 18:16

शनि 04-05-2090 18:16

बुध 03-05-2091 18:18

शुक्र 03-09-2094 18:18

सूर्य 03-09-2095 18:18

चंद्र 03-05-2097 18:18

मंगल 03-07-2098 18:18

राहू 03-07-2101 18:18

बृहस्पति 04-03-2104 18:17

शनि 04-05-2107 18:16

बुध 04-03-2110 18:16

केतु 03-05-2111 18:18

वर्तमान दशा

| दशा नाम | ग्रह | आरम्भ तिथि | समाप्ति तिथि |
|---------------|----------|------------------|------------------|
| महादशा | राहू | 03-05-2014 18:18 | 03-05-2032 18:18 |
| अंतर्दशा | शनि | 08-06-2019 18:18 | 14-04-2022 18:18 |
| प्रत्यंतर दशा | बृहस्पति | 23-11-2021 23:06 | 14-04-2022 18:18 |
| सूक्ष्म दशा | बुध | 02-01-2022 20:42 | 22-01-2022 05:49 |
| प्राण दशा | बुध | 02-01-2022 20:42 | 05-01-2022 14:35 |

*ध्यान दे - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।

योगिनी दशा - I

संकटा (8 वर्ष)

19-03-1990 20:14

19-03-1998 20:14

संकटा 29-12-1991 20:13

मंगला 20-03-1992 20:12

पिंगला 30-08-1992 20:11

धान्य 30-04-1993 20:11

भ्रामरी 22-03-1994 20:10

भद्रिका 02-05-1995 20:10

उल्का 01-09-1996 20:09

सिद्धि 19-03-1998 20:14

मंगला (1 वर्ष)

19-03-1998 20:14

19-03-1999 20:14

मंगला 29-03-1998 20:14

पिंगला 18-04-1998 20:14

धान्य 18-05-1998 20:14

भ्रामरी 28-06-1998 20:13

भद्रिका 17-08-1998 20:13

उल्का 17-10-1998 20:13

सिद्धि 27-12-1998 20:13

संकटा 19-03-1999 20:14

पिंगला (2 वर्ष)

19-03-1999 20:14

19-03-2001 20:14

पिंगला 29-04-1999 20:13

धान्य 29-06-1999 20:13

भ्रामरी 18-09-1999 20:12

भद्रिका 28-12-1999 20:12

उल्का 28-04-2000 20:12

सिद्धि 17-09-2000 20:12

संकटा 27-02-2001 20:11

मंगला 19-03-2001 20:14

धान्य (3 वर्ष)

19-03-2001 20:14

19-03-2004 20:14

धान्य 19-06-2001 20:14

भ्रामरी 19-10-2001 20:14

भद्रिका 19-03-2002 20:14

उल्का 19-09-2002 20:14

सिद्धि 19-04-2003 20:14

संकटा 19-12-2003 20:14

मंगला 19-01-2004 20:14

पिंगला 19-03-2004 20:14

भ्रामरी (4 वर्ष)

19-03-2004 20:14

19-03-2008 20:14

भ्रामरी 29-08-2004 20:13

भद्रिका 21-03-2005 20:13

उल्का 21-11-2005 20:13

सिद्धि 31-08-2006 20:13

संकटा 21-07-2007 20:12

मंगला 31-08-2007 20:11

पिंगला 20-11-2007 20:10

धान्य 19-03-2008 20:14

भद्रिका (5 वर्ष)

19-03-2008 20:14

19-03-2013 20:14

भद्रिका 29-11-2008 20:13

उल्का 29-09-2009 20:13

सिद्धि 18-09-2010 20:12

संकटा 28-10-2011 20:12

मंगला 18-12-2011 20:12

पिंगला 28-03-2012 20:12

धान्य 28-08-2012 20:12

भ्रामरी 19-03-2013 20:14

योगिनी दशा - ॥

उल्का (6 वर्ष)

19-03-2013 20:14

19-03-2019 20:14

उल्का 19-03-2014 20:14

सिद्धि 19-05-2015 20:14

संकटा 18-09-2016 20:13

मंगला 18-11-2016 20:13

पिंगला 18-03-2017 20:13

धान्य 18-09-2017 20:13

भ्रामरी 18-05-2018 20:13

भद्रिका 19-03-2019 20:14

सिद्धि (7 वर्ष)

19-03-2019 20:14

19-03-2026 20:14

सिद्धि 29-07-2020 20:14

संकटा 18-02-2022 20:14

मंगला 28-04-2022 20:14

पिंगला 17-09-2022 20:14

धान्य 17-04-2023 20:14

भ्रामरी 27-01-2024 20:14

भद्रिका 16-01-2025 20:13

उल्का 19-03-2026 20:14

संकटा (8 वर्ष)

19-03-2026 20:14

19-03-2034 20:14

संकटा 29-12-2027 20:13

मंगला 20-03-2028 20:12

पिंगला 30-08-2028 20:11

धान्य 30-04-2029 20:11

भ्रामरी 22-03-2030 20:10

भद्रिका 02-05-2031 20:10

उल्का 01-09-2032 20:09

सिद्धि 19-03-2034 20:14

मंगला (1 वर्ष)

19-03-2034 20:14

19-03-2035 20:14

मंगला 29-03-2034 20:14

पिंगला 18-04-2034 20:14

धान्य 18-05-2034 20:14

भ्रामरी 28-06-2034 20:13

भद्रिका 17-08-2034 20:13

उल्का 17-10-2034 20:13

सिद्धि 27-12-2034 20:13

संकटा 19-03-2035 20:14

पिंगला (2 वर्ष)

19-03-2035 20:14

19-03-2037 20:14

पिंगला 29-04-2035 20:13

धान्य 29-06-2035 20:13

भ्रामरी 18-09-2035 20:12

भद्रिका 28-12-2035 20:12

उल्का 28-04-2036 20:12

सिद्धि 17-09-2036 20:12

संकटा 27-02-2037 20:11

मंगला 19-03-2037 20:14

धान्य (3 वर्ष)

19-03-2037 20:14

19-03-2040 20:14

धान्य 19-06-2037 20:14

भ्रामरी 19-10-2037 20:14

भद्रिका 19-03-2038 20:14

उल्का 19-09-2038 20:14

सिद्धि 19-04-2039 20:14

संकटा 19-12-2039 20:14

मंगला 19-01-2040 20:14

पिंगला 19-03-2040 20:14

योगिनी दशा - III

भ्रामरी (4 वर्ष)

19-03-2040 20:14

19-03-2044 20:14

भ्रामरी 29-08-2040 20:13

भद्रिका 21-03-2041 20:13

उल्का 21-11-2041 20:13

सिद्धि 31-08-2042 20:13

संकटा 21-07-2043 20:12

मंगला 31-08-2043 20:11

पिंगला 20-11-2043 20:10

धान्य 19-03-2044 20:14

भद्रिका (5 वर्ष)

19-03-2044 20:14

19-03-2049 20:14

भद्रिका 29-11-2044 20:13

उल्का 29-09-2045 20:13

सिद्धि 18-09-2046 20:12

संकटा 28-10-2047 20:12

मंगला 18-12-2047 20:12

पिंगला 28-03-2048 20:12

धान्य 28-08-2048 20:12

भ्रामरी 19-03-2049 20:14

उल्का (6 वर्ष)

19-03-2049 20:14

19-03-2055 20:14

उल्का 19-03-2050 20:14

सिद्धि 19-05-2051 20:14

संकटा 18-09-2052 20:13

मंगला 18-11-2052 20:13

पिंगला 18-03-2053 20:13

धान्य 18-09-2053 20:13

भ्रामरी 18-05-2054 20:13

भद्रिका 19-03-2055 20:14

सिद्धि (7 वर्ष)

19-03-2055 20:14

19-03-2062 20:14

सिद्धि 29-07-2056 20:14

संकटा 18-02-2058 20:14

मंगला 28-04-2058 20:14

पिंगला 17-09-2058 20:14

धान्य 17-04-2059 20:14

भ्रामरी 27-01-2060 20:14

भद्रिका 16-01-2061 20:13

उल्का 19-03-2062 20:14

संकटा (8 वर्ष)

19-03-2062 20:14

19-03-2070 20:14

संकटा 29-12-2063 20:13

मंगला 20-03-2064 20:12

पिंगला 30-08-2064 20:11

धान्य 30-04-2065 20:11

भ्रामरी 22-03-2066 20:10

भद्रिका 02-05-2067 20:10

उल्का 01-09-2068 20:09

सिद्धि 19-03-2070 20:14

मंगला (1 वर्ष)

19-03-2070 20:14

19-03-2071 20:14

मंगला 29-03-2070 20:14

पिंगला 18-04-2070 20:14

धान्य 18-05-2070 20:14

भ्रामरी 28-06-2070 20:13

भद्रिका 17-08-2070 20:13

उल्का 17-10-2070 20:13

सिद्धि 27-12-2070 20:13

संकटा 19-03-2071 20:14

*ध्यान दे - सभी दिनांक दशा समाप्ति को दर्शाते हैं।

कालसर्प दोष



जब किसी व्यक्ति की कुंडली में राहु और केतू ग्रहों के बीच अन्य सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प दोष का निर्माण होता है। क्योंकि कुंडली के एक भाग में राहु और दूसरे भाग में केतु के बैठे होने से अन्य सभी ग्रहों से आ रहे फल रुक जाते हैं। इन दोनों ग्रहों के बीच में सभी ग्रह फँस जाते हैं और यह जातक के लिए एक समस्या बन जाती है। इस दोष के कारण फिर काम में बाधा, नौकरी में रुकावट, शादी में देरी और धन संबंधित परेशानियाँ, उत्पन्न होने लगती हैं।

कालसर्प योग वाले सभी जातकों पर इस योग का समान प्रभाव नहीं पड़ता। किस भाग में कौन सी राशि अवस्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह कहां बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है - इन सब बातों का भी संबंधित जातक पर भरपूर असर पड़ता है। इसलिए मात्र कालसर्प सुनकर भयभीत हो जाने की जरूरत नहीं बल्कि उसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उसके पक्षांशों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लेना ही बुद्धिमता कही जायेगी। कालसर्प योग कुंडली में खराब अवश्य माना जाता है किन्तु विधिवत तरह से यदि इसका उपाय किया जाए तो यही कालसर्प दोष सिद्धि योग भी बन सकता है।

महत्वपूर्ण कालसर्प दोष के 12 प्रकार।

अनन्त

कुलिक

वासुकी

शंखपाल

पद्म

महापद्म

तक्षक

कर्कोटक

शंखचूड़

घातक

विषधर

शेषनाग

आपके जन्मपत्रिका में कालसर्पदोष



कालसर्प की उपस्थिति नहीं है

आपकी कुंडली में कालसर्प दोष नहीं है।

कालसर्प नाम

नहीं

मांगलिक विश्लेषण - I

मांगलिक दोष क्या होता है?



जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल गर्ह, लग्न से पर्थम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

जब मंगल लग्न में होता है तो मंगल लग्न में मंगल के साथ होने पर मांगलिक दोष अधिक प्रबल माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार यदि लड़का और लड़की दोनों का मांगलिक दोष रद्द हो रहा है तो उन्हें सुखी वैवाहिक जीवन में कोई रुकावट नहीं आएगी है।

वहीं दूसरी ओर यदि यह मांगलिक दोष रद्द नहीं किया गया तो उन्हें जीवन में अनावश्यक समस्याओं और बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

इसलिए किसी को भी अपनी कुंडली का मिलान करने के बाद ही अपने वैवाहिक जीवन की शुरुआत करनी चाहिए। मांगलिक दोष को ठीक से रद्द करने के बाद जातक को एक शांतिपूर्ण और समृद्ध से भरा जीवन प्राप्त होगा।

लघ्ने व्यये सुखे वापि सप्तमे वा अष्टमे कुजे ।
शुभ दृग् योग हीने च पतिं हन्ति न संशयम् ॥

मांगलिक विश्लेषण



आप की कुंडली में मांगलिक दोष है

आपकी कुंडली में निम्न मंगल दोष पाया गया है।

मांगलिक का प्रकार

निम्न मंगल दोष

मांगलिक विश्लेषण - II

मांगलिक फल

आपकी कुंडली में निम्न मंगल दोष है और वर्तमान में मंगल दोष की सीमा प्रभावी है और इसलिए उचित सावधानी की आवश्यकता है। आपकी कुंडली में मांगलिक दोष है। जन्म कुण्डली में मंगल लग्न से आठवें भाव में तथा चन्द्र कुण्डली में मंगल छठे भाव में स्थित है।

मांगलिक दोष के उपाय

- वर और वधू दोनों का मांगलिक दोष होने पर विवाह सफल हो सकता है।
- मंगलवार का व्रत करना भी उत्तम उपाय है। व्यक्ति को केवल दूध या फलों के रस का ही सेवन करना चाहिए और केवल तुअर दाल का ही सेवन करना चाहिए।
- व्यक्ति को प्रतिदिन हनुमान चालीसा, गायत्री मंत्र और मंगल चंडिका स्तोत्र जैसे मंत्रों का पाठ करना चाहिए। नवग्रह मंत्र का जाप करने से भी मदद मिलती है, क्योंकि यह मंत्र गलत तरीके से रखे गए मंगल को शांत करता है।
- मंगलवार के दिन दान करना मांगलिक व्यक्तियों के लिए एक उपाय माना जाता है।

साढ़ेसाती विश्लेषण - ।

साढ़ेसाती क्या होता है?



साढ़े साती का तात्पर्य साढ़े सात वर्ष की अवधि से है, जिसमें शनि तीन राशियों से होकर गुजरता है, चंद्र राशि, एक चंद्रमा से पहले और एक उसके बाद। साढ़े साती तब शुरू होती है जब शनि (शनि) जन्म चंद्र राशि से बारहवीं राशि में प्रवेश करता है और जब शनि जन्म चंद्र राशि से दूसरी राशि छोड़ता है तो समाप्त होता है।

चूँकि शनि को एक राशि को पार करने में लगभग ढाई साल लगते हैं जिसे शनि की ढैया कहा जाता है, इसलिए तीन राशियों को पार करने में लगभग साढ़े सात साल लगते हैं और इसीलिए इसे साढ़े साती के नाम से जाना जाता है। सामान्यतः साढ़ेसाती जीवन काल में तीन बार आती है-पहली बाल्यावस्था में, दूसरी यौवन में और तीसरी वृद्धावस्था में।

प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा और माता-पिता पर पड़ता है। दूसरी साढ़ेसाती का प्रभाव व्यवसाय, वित्त और परिवार पर पड़ता है। आखिरी वाला स्वास्थ्य को किसी और चीज से ज्यादा प्रभावित करता है।

क्या आप साढ़ेसाती में है?



साढ़ेसाती दोष उपस्थिति है

हां, वर्तमान में आप साढ़ेसाती से गुजर रहे हैं।

विचार करने की दिनांक

04-01-2022

शनि राशि

कुंभ

चंद्र राशि

मकर

वक्री शनि

हाँ

रत्न उपाय विचार

प्रत्येक ग्रह का अपना अनूठा संबंधित ज्योतिषीय रत्न होता है जो ग्रह के समान ही ब्रह्मांडीय रंग ऊर्जा को विकीर्ण करता है। रत्न सकारात्मक किरणों के परावर्तन या नकारात्मक किरणों के अवशोषण द्वारा कार्य करते हैं। उपयुक्त रत्न को धारण करने से मणि फिल्टर के रूप में उस पर संबंधित ग्रह के सकारात्मक प्रभाव में वृद्धि हो सकती है और पहनने वाले के शरीर में केवल सकारात्मक स्पंदनों को प्रवेश करने की अनुमति मिलती है।

जीवन रत्न



लाल मूंगा

लग्न, शरीर और शरीर से सम्बंधित सभी बातों का - जैसे स्वास्थ्य, नाम, दीघार्यु, प्रतिष्ठा, जीवन उद्देश्य आदि का प्रतीक होता है। संक्षेप में, इस में पूरे जीवन का सार समाया है। इसलिए लग्न के स्वामी अथार्त लग्नेश से सम्बंधित रत्न को जीवन रत्न कहा जाता है। इस रत्न के गुणों तथा शक्तियों का पूरा लाभ उठाने के लिए इसे आजीवन पहना जा सकता है और पहनना भी चाहिए।

कारक रत्न



पुखराज

जन्म कुंडली का पंचम भाव भी एक शुभ भाव है। पांचवा भाव बुद्धि, उच्च शिक्षा, संतान, अपर्त्याशत धन-प्राप्ति आदि का कारक है। इस भाव को 'पूर्व पुण्य कर्मों' का अथार्त पिछले जन्मों के अच्छे कर्मों का स्थान भी माना जाता है। इसी कारण इसे शुभ भाव कहते हैं। पंचम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को कारक रत्न कहा जाता है।

भाग्य रत्न



पन्ना

जन्म-कुंडली के नवम भाव को भाग्य या प्रारब्ध का स्थान कहा जाता है। यह भाव भाग्य, सफलता, ज्ञान, गुणदोष और उपलब्धियों आदि का कारक है। यह भाव व्यक्ति द्वारा पिछले जन्मों में किये गए अच्छे कर्मों के कारण प्राप्त होने वाले फल स्वरूप आनंद की ओर संकेत करता है। नवम भाव के स्वामी से सम्बंधित रत्न को भाग्य रत्न कहते हैं। इस रत्न को धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है।

जीवन रत्न

लाल मूंगा



विकल्प रेड जैस्पर

दिन मंगलवार

उंगली अनामिका

देव मंगल

धातु शरीर के वजन के अनुसार

धातु ताम्बा / सोना



विवरण

लाल मूंगा मंगल ग्रह द्वारा शासित रत्न है। लाल मूंगा धारण करने से व्यक्ति साहसी बनता है और उसके शत्रु परास्त होते हैं। लाल मूंगा बुरी आत्माओं, जादू टोना, बुरे सपनों जैसे चीजों से बचाता है।



पहनने का समय

लाल मूंगा मंगलवार की सुबह (सूर्योदय के एक घंटे के भीतर) चंद्र मास के शुक्ल पक्ष में धारण करना चाहिए।



उंगली

मंत्र जाप के बाद लाल मूंगा दाहिने हाथ की अनामिका में धारण करना चाहिए।



भार व धातु

लाल मूंगा आपके शरीर के वजन के अनुसार जैसे: 1 कैरेट 10 किलो के बराबर होता है। उदाहरण के लिए यदि आपके शरीर का वजन लगभग 53 किलो है, तो आपको 5 कैरेट से अधिक लाल मूंगा चुनना होगा। इसे सोने की तांबे की अंगूठी में स्थापित करना चाहिए। अंगूठी ऐसी बनानी चाहिए कि पत्थर त्वचा को छुए।



मंत्र

एक बार अनुष्ठान पूरा हो जाने पर व्यक्ति को फूल और धूप से पत्थर की पूजा करनी चाहिए। लाल मूंगा निम्न मंत्र का 10000 बार जाप करने के लिए।

॥ ॐ क्रां क्रीं क्रीं सः भौमाय नमः ॥



विकल्प

कोई भी लाल मूंगा के विकल्प जैसे संग मूंगी, कारेलियन और रेड जैस्पर का उपयोग कर सकता है।



सावधानी

इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि लाल मूंगा को पन्ना, हीरा, नीलम, गोमेद और वैदूर्य उनके विकल्प के साथ नहीं पहना जाना चाहिए।



प्राण प्रतिष्ठा

मूंगा धारण करने से पहले अंगूठी को गाय के ताजे दूध या गंगाजल में दो दिन तक डुबो कर रखना चाहिए।

कारक रत्न

पुखराज



विकल्प टोपाज

दिन गुरुवार

उंगली पहली उंगली (अंगूठे से)

देव बृहस्पति

धातु शरीर के वजन के अनुसार

धातु सोना



विवरण

पुखराज बृहस्पति द्वारा शासित रत्न है। पुखराज धारण करने से ज्ञान, संपत्ति, दीर्घायु, यश, सदाचार, उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। पुखराज बुरी आत्माओं से रक्षा करता है।



पहनने का समय

पुखराज को गुरुवार की सुबह (सूर्योदय के एक घंटे के भीतर) चंद्र मास के शुक्ल पक्ष में धारण करना चाहिए।



उंगली

मंत्र जाप के बाद पुखराज को दाहिने हाथ की पहली उंगली (अंगूठे से) में धारण करना चाहिए।



भार व धातु

पुखराज का वजन आपके शरीर के वजन के अनुसार होना चाहिए जैसे: 1 कैरेट 10 किलो के बराबर होता है। उदाहरण के लिए यदि आपके शरीर का वजन लगभग 56 किलो है, तो आपको 5 कैरेट से अधिक पीला नीलम चुनना होगा। इसे सोने की अंगूठी में स्थापित करना चाहिए। अंगूठी ऐसी बनानी चाहिए कि पत्थर त्वचा को छुए।



मंत्र

एक बार अनुष्ठान पूरा हो जाने के बाद व्यक्ति को फूल और धूप के साथ पुखराज की पूजा करनी चाहिए। पुखराज के लिए आप निम्न मंत्र को चुन कर 19,000 बार मंत्र का जाप करें।

॥ ॐ ग्रां ग्रीं ग्रीं सः गुरवे नमः ॥



विकल्प

कोई भी येलो मोती, येलो जिस्कोन, येलो टूमलाइन या पुखराज जैसे पीले मोती के विकल्प का उपयोग कर सकता है।



सावधानी

इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पुखराज को ओपल, हीरा, नीलम, गोमेद और वैदूर्य के साथ नहीं पहनना चाहिए।



प्राण प्रतिष्ठा

पुखराज धारण करने से पहले अंगूठी को गाय के ताजे दूध या गंगाजल में दो दिन तक डुबाकर रखना चाहिए। उसके बाद अंगूठी को बाहर निकालकर, आपको हवन के दौरान विष्णु जी की पूजा के साथ साथ 19000 गुरु मंत्र का जाप करना चाहिए।

भाग्य रत्न

पन्ना



विकल्प पेरिडॉट

दिन बुधवार

उंगली कनिष्ठा

देव बुध

धातु शरीर के वजन के अनुसार

धातु सोना



विवरण

भारतीय वैदिक ज्योतिष के अनुसार पन्ना पत्थर पर बुध का शासन है। पन्ना धारण करने से अच्छा स्वास्थ्य, व्यापार, मजबूत शरीर, धन, संपत्ति, अच्छी नजर आती है। पन्ना बुरी आत्माओं, कीड़ों, बुरी नजर के बुरे प्रभाव से बचाता है। पन्ना मिर्गी, पागलपन, बुरे सपने आदि को दूर करता है और सुरक्षा प्रदान करता है।



पहनने का समय

पन्ना बुधवार की सुबह (सूर्योदय के एक घंटे के भीतर) चंद्र मास के शुक्ल पक्ष में धारण करना चाहिए।



उंगली

मंत्र जाप के बाद पन्ना दाहिने हाथ की कनिष्ठा उंगली में धारण करना चाहिए।



मंत्र

एक बार अनुष्ठान पूरा हो जाने पर व्यक्ति को फूल और धूप से पत्थर की पूजा करनी चाहिए। पन्ना के लिए निम्न मंत्र का 9000 बार जाप करना है।

॥ ॐ ब्रां ब्रौं सः बुधाय नमः ॥



विकल्प

पन्ना के विकल्प जैसे ग्रीन ओनाक्स, पेरिडॉट, ग्रीन जिंक्रोन, ग्रीन एग्रेट या जेड का भी उपयोग किया जा सकता है।



भार व धातु

अपने शरीर के वजन के अनुसार पन्ना चुनें जैसे: 1 कैरेट 10 किग्रा के बराबर होता है। उदाहरण के लिए यदि आपके शरीर का वजन लगभग 52 किलो है, तो आपको 5 कैरेट से अधिक पन्ना चुनना होगा। इसे सोने की अंगूठी में स्थापित करना चाहिए। अंगूठी ऐसी बनानी चाहिए कि पत्थर त्वचा को छुए।



प्राण प्रतिष्ठा

पन्ना धारण करने से पहले अंगूठी को गाय के ताजे दूध या गंगाजल में दो दिन तक डुबो कर रखना चाहिए।



सावधानी

इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि लाल मूंगे, मोती या पुखराज के साथ पन्ना नहीं पहना जाना चाहिए।

रुद्राक्ष फल



चौदह + सत्रह मुखी रुद्राक्ष

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

॥ ॐ ह्रीं हुं हौं नमः ॥

आपको चौदह मुखी और सत्रह मुखी रुद्राक्ष के संयोजन को धारण करने की सलाह दी जाती है।

चौदह मुखी रुद्राक्ष को हमारे प्राचीन ग्रंथों में सबसे कीमती और दिव्य रत्न (देव मणि) माना गया है। यह शक्तिशाली रुद्राक्ष भगवान हनुमान द्वारा शासित है, जिनका इंद्रियों पर पूर्ण स्वामित्व है। यह रुद्राक्ष पहनने वाले को निडर बनाता है और स्वाभाविक रूप से सफलता प्राप्त करने के लिए जोखिम लेने की प्रवृत्ति विकसित करता है। इस दिव्य चौदह मुखी रुद्राक्ष पर मंगल और शनि का शासन है। यह दिव्य और दुर्लभ चौदह मुखी रुद्राक्ष मंगल और शनि के सभी नकारात्मक प्रभावों को दूर करता है और शांत करता है। इसके विपरीत कमजोर मंगल आपको आवेगी, अधीर, आक्रामक और शक्तिशाली बनाता है।

सत्रह मुखी रुद्राक्ष देवी कात्यायनी और देवी दुर्गा के सबसे शक्तिशाली रूपों में से एक है। ऐसा माना जाता है कि रुद्राक्ष की माला पहनने वाले को संतान, समृद्धि, सौभाग्य और बहुतायत का आशीर्वाद प्राप्त होता है। यह पहनने वाले की इच्छाओं को पूरा करता है और धन उत्पन्न करने की शक्ति को बढ़ाता है। इसके अलावा सत्रह मुखी रुद्राक्ष भी पहनने वाले को एक अच्छा जीवनसाथी पाने में मदद करता है। सत्रह मुखी रुद्राक्ष पर शनि ग्रह का शासन है। यह देवी ऊर्जा के साथ संबंध बढ़ाता है, और पहनने वाले को अपने जीवन से सभी बाधाओं को दूर करने में मदद करता है और अपार शक्ति और दिव्य चुंबकत्व दिखाता है।

शुभाशुभ अंक

2

भाग्यांक

6

मूलांक

1

नामांक

| | |
|---------------|----------------------------|
| आपका नाम | Sanjay Sharma |
| जन्म दिनांक | 15-9-1994 |
| मूलांक | 6 |
| मूलांक स्वामी | शुक्र |
| मित्र अंक | 4,3,9 |
| सम अंक | 2,5,7 |
| शत्रु अंक | 1,8 |
| शुभ दिन | गुरुवार, मंगलवार, शुक्रवार |
| शुभ रत्न | हीरा, ओपल |
| शुभ उपरत्न | जिरकॉन , सफेद नीलम |
| शुभ देवता | देवी |
| शुभ धातु | चांदी |
| शुभ रंग | सफेद |
| शुभ मंत्र | ॥ ओम शुम शुक्राय नमः ॥ |

अंक ज्योतिषीय फल - I

आपके बारे में

आपका मूलांक अगर 6 है, तो इसका स्वामी ग्रह शुक्र है। मूलांक 6 के प्रभाव से आपमें चुंबकीय आकर्षण रहेगा। आप मिलनसार और मित्रों से प्रेम करने वाले रहेंगे। इन गुणों के कारण आप लोगों को पसंद आएंगे। खूबसूरती और खूबसूरत चीजों की ओर आपका आकर्षित होना स्वाभाविक होगा। विपरीत लिंग के लोगों पर आप मोहित होंगे और सुंदर स्त्री-पुरुषों के साथ संबंध बनाए रखना और उनके साथ बातचीत करना आपका स्वभाव होगा। आपकी ललित कलाओं में रुचि होगी, जिसे आप अपने करियर या व्यवसाय के रूप में भी चुन सकते हैं।

आप संगीत-साहित्य, पेंटिंग और मूर्तियों आदि के शौकीन होंगे। आप अच्छे कपड़े और अच्छी तरह से सजाए गए घरों की कल्पना करेंगे। मेहमानों का मनोरंजन करने में आपको गर्व होगा। आप अपने घर और कार्यालय में सभी वस्तुओं को अच्छी तरह से सजाकर रखना और बेहतरीन फर्नीचर, पर्दे आदि रखना पसंद करेंगे। स्वभाव से, आप थोड़े हठी होंगे। आप यह सुनिश्चित करने का प्रयास करेंगे कि आपसे बात करने वाला कोई भी व्यक्ति आपके दृष्टिकोण को स्वीकार करे। अपने विचारों पर स्थिर रहना और ईर्ष्या करना भी आपके स्वभाव का हिस्सा है। अपने काम में प्रतिस्पर्धा को सहन करना आपके लिए मुश्किल होगा। इससे तनाव और अपराध बोध हो सकता है। आप दिल जीतने में अपनी विशेषज्ञता बनाए रखेंगे। आपके बहुत सारे दोस्त होंगे क्योंकि आप सबका दिल जीतने में माहिर हैं।

शुभ व्रत समय

शुक्रवार के दिन शुक्र भगवान का व्रत किया जाता है जो की धन, विवाह, संतान और भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए किया जाता है और इसे शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से शुरू करना चाहिए। सूर्योदय से पहले उठकर स्नान आदि पूर्ण कर लें। भगवान शुक्र या देवी संतोषी मां की मूर्ति या चित्र लगाएं।

पूजा सामग्री में गुड़, चना और पानी जैसी इन सब चीज को एक बड़े बर्तन में रख लें। भगवान शुक्र या देवी संतोषी मां की पूजा व्यवस्थित तरीके से करें। इसके बाद भगवान शुक्र या देवी संतोषी मां की कथा सुनी जाती है और उसके बाद गुड़ और चने का प्रसाद लोगों में बांटा जाता है। अंत में बड़े बर्तन का पानी घर में छिड़कें और बचे हुए पानी को तुलसी के पौधे में डालें। इसी प्रकार 11 या 21 शुक्रवार तक नियमित रूप से इस व्रत का पालन करें।

अंक ज्योतिषीय फल - ॥

शुभ वास्तु

अगर आप अपना घर बनाना चाहते हैं तो उसके लिए सही दिशा का चुनाव करें। आपके लिए दक्षिण-पूर्व (अग्निकोण) अच्छा है। घर का अंक 3, 6 या 9 से हो तो अच्छा रहेगा।

शहर के दक्षिण-पूर्व या अपने घर के दक्षिण-पूर्व भाग में निवास करें। ये आपके लिए अच्छा रहेगा। अगर आप अपने रोजगार में इन नियमों का पालन करते हैं तो यह आपके लिए फायदेमंद रहेगा। आपके घर या फर्नीचर का रंग हल्का नीला या आसमानी नीला होना चाहिए।

शुभ गायत्री मंत्र

शुक्र के शुभ प्रभाव को बढ़ाने के लिए आपको सुबह 11, 21 या 108 बार शुक्र गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए।

॥ ॐ अश्वध्वजाय विद्महे धनुर्हस्ताय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ॥

शुभ ध्यान समय

शुक्र के शुभ प्रभाव को बढ़ाने के लिए आपको सुबह 11, 21 या 108 बार शुक्र गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए।

॥ ॐ अश्वध्वजाय विद्महे धनुर्हस्ताय धीमहि तन्नः शुक्रः प्रचोदयात् ॥

अंक ज्योतिषीय फल - III

शुभ मंत्र

शुक्र या देवी दुर्गा की पूजा करें। “ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः” मंत्र का प्रतिदिन कम से कम 108 बार जाप करें।

अष्टमी(भारतीय कैलंडर की 8वीं तारीख को) को व्रत रखें और दुर्गा सप्तशती का पाठ करें। इससे आपको तरह-तरह की परेशानियों और बीमारियों से निजात मिलेगा । अगर आपके लिए यह संभव नहीं है तो रोजाना सुबह देवी दुर्गा की तस्वीर देखें।

आपके के लिए शुभ समय

पाश्चात्य दृष्टिकोण के अनुसार सूर्य वृष राशि में 21 अप्रैल से 21 मई तक और तुला राशि में 24 सितंबर से 13 अक्टूबर तक रहता है। भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार ये अवधि 13 मई से 14 जून और 17 अक्टूबर से 13 नवंबर तक रहती है।

ये राशियां शुक्र की हैं और 14 मार्च से 12 अप्रैल यानी मीन राशि में शुक्र उच्च का होता है। अतः ऊपर बताए गए काल मूलांक 6 के जातकों के लिए कोई नया कार्य या महत्वपूर्ण कार्य देखने के लिए भाग्यशाली होता है।



वृश्चिक

| | |
|----------------|---------|
| वैदिक नाम | वृश्चिक |
| स्वामी | मंगल |
| प्रतिक | बिच्छू |
| तत्त्व | जलीय |
| भाग्यशाली रत्न | पन्ना |

**देहं रूपं च ज्ञानं च वणरं चैव बलाबलम्।
सुखं दुःखं स्वभावञ्च लग्नभाविनूरीक्षयेत्॥**

वृश्चिक राशि के जातक गुप्त, गहरे, चुप रहने वाले, रहस्यमय, पुनर्जीवित या पतित, आरक्षित, समझने में सक्षम, साहसी, दृढ़ इच्छाशक्ति वाले, लगातार, विचारों में जिद्दी, रचनात्मक, आत्मनिर्भर, आत्म-नियंत्रित (शायद जुनून के अलावा) होते हैं), और चुप।

आध्यात्मिक ज्योतिषी इसाबेल हिककी के अनुसार, वृश्चिक राशि के उदय के साथ कोई भी अविकसित आत्मा पैदा नहीं होती है। यह एक बिजलीघर के उदय का संकेत है।

“ यह युद्ध के मैदान का प्रतिनिधित्व करता है जहां उच्च और निम्न स्वयं को नश्वर युद्ध के लिए आना चाहिए। उन्हें संरेखित किया जाना चाहिए और निचले स्व के बजाये आपको अपने उच्चतर स्व, से ईश्वर के बताये हुए रास्ते पर चलना चाहिए और उनका पालन करना चाहिए।

शारीरिक, भावनात्मक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तर सभी आपमें शामिल हैं। आप ऊपर तौर पे शांत दिखते हैं, लेकिन आप अंदर से बेहद भावुक हो सकते हैं। “अभी भी पानी गहरा बहता है”, जैसा कि वे कहते हैं। आप शांत किसम के होते हैं, हमेशा दूसरों की प्रेरणाओं को जानना चाहते हैं, लेकिन अपने स्वयं के बारे में कभी भी कुछ खुलासा नहीं करते हैं।

आप जासूस या खोज जैसे खेल खेलना पसंद करते हैं। आपको सब कुछ जानना होगा, कैसे और क्यों। आपके पास जोश के साथ-साथ दृढ़ संकल्प और ताकत है, जो किसी भी विरोधी को, यहां तक कि खुद को भी मात देने के लिए पर्याप्त है।

“ आपको आक्रोश, अधिकार और ईर्ष्या को दूर करने की आवश्यकता है। मनोगत, मृत्यु, सेक्स या उपचार के प्रति आकर्षण, व्यस्तता, रुचि और/या क्षमता हो सकती है।

आप शैतान या देवदूत, चील या चुभने वाले बिच्छू हो सकते हैं। सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक: क्षमा। मंगल और प्लूटो वृश्चिक राशि पर शासन करते हैं इसलिए मंगल और प्लूटो आपके चार्ट में महत्वपूर्ण होंगे।



सीखने के लिए आध्यात्मिक सबक

माफी

सकारात्मक लक्षण

| | |
|---------------|-------------------------|
| जन्म रत्न | लाल मूंगा |
| अनुकूल राशी | वृषभ |
| उपवास का दिन | शुक्रवार |
| भाग्यशाली रंग | लाल, सफेद, पीला |
| भाग्यशाली दिन | रविवार, सोमवार, गुरुवार |
| शुभ संख्याएं | 1,2,5 |
| अनुकूल दिशा | उत्तर |
| विशेषताएं | उग्र, चौकस |

नकारात्मक लक्षण

| | |
|----------------------|--------|
| गुणवत्ता की आवश्यकता | दृष्टि |
|----------------------|--------|



DIVINE MESSENGER THE SOURCE OF LIFE



Divine Messenger (Formerly known as Destiny Guide) was established by A V Shastri, CMD. It was started with an approach of astrological ventures in the Internet world and endowed technology- expedition solutions to clients all over the world.



Divine Messenger

info@apireports.com

<https://divinemessenger.in/>

+91-9205722942